

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा: एक जीवंत भारतीय ज्ञान परम्परा

Dr. Deepak Verma

Assistant Professor, Department of Music (Vocal), Chaudhary Devi Lal University, Sirsa, Haryana

 Read the Article Online



Published on 10.09.2026

सार

भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-परम्पराओं में से एक है, जिसका प्रमुख आधार गुरु-शिष्य परम्परा रही है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में यह परम्परा केवल संगीत-शिक्षण की पद्धति नहीं, बल्कि ज्ञान, साधना, संस्कार, अनुशासन तथा सांस्कृतिक निरन्तरता का जीवंत माध्यम है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य गुरु-शिष्य परम्परा को भारतीय ज्ञान परम्परा के एक जीवंत स्वरूप के रूप में विश्लेषित करना तथा हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संरक्षण एवं संवर्धन में इसकी भूमिका का अध्ययन करना है। शोध में गुरु-शिष्य सम्बन्ध की दार्शनिक पृष्ठभूमि, मौखिक ज्ञान-परम्परा, रियाज़, नैतिक मूल्यों तथा समकालीन संगीत शिक्षा में इसकी प्रासंगिकता का विवेचन किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि आधुनिक शैक्षिक परिवेश एवं डिजिटल युग में भी गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय संगीत की मौलिकता, सांस्कृतिक विरासत एवं ज्ञान-संपदा के संरक्षण में समान रूप से महत्वपूर्ण और प्रासंगिक बनी हुई है।

कुंजी शब्द: भारतीय ज्ञान परम्परा, गुरु-शिष्य परम्परा, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत, संगीत शिक्षण, मौखिक परम्परा, रियाज़।

1 भूमिका

भारतीय सभ्यता का मूल आधार ज्ञान, साधना तथा संस्कार की अखण्ड परम्परा रही है। यहाँ शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना अथवा कौशल का अर्जन नहीं, बल्कि व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विकास को सुनिश्चित करना रहा है। इसी कारण भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान को अनुभव, अनुशासन, आत्मानुशीलता तथा गुरु के मार्गदर्शन से प्राप्त होने वाली सतत् प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया गया है।¹ वैदिक एवं उपनिषदिक साहित्य में गुरु को ज्ञान का प्रकाशक तथा शिष्य को सत्य का अन्वेषी माना गया है, जहाँ श्रद्धा, सेवा, विनय एवं जिज्ञासा को ज्ञानार्जन की अनिवार्य आधारशिलाएँ स्वीकार किया गया है।²

भारतीय ज्ञान परम्परा के इसी मूल स्वरूप का सशक्त प्रतिबिम्ब हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परम्परा में परिलक्षित होता है। भारतीय संगीत का विकास मुख्यतः मौखिक परम्परा के माध्यम से हुआ है, जिसमें राग, बंदिश, आलाप, तान, लयकारी, स्वर-संवेदन तथा प्रस्तुति की सूक्ष्मताओं का संप्रेषण प्रत्यक्ष शिक्षण, निरन्तर अभ्यास तथा गुरु के सान्निध्य द्वारा सम्पन्न होता है। इस प्रक्रिया में संगीत का ज्ञान केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित नहीं रहता, बल्कि उसमें सौन्दर्यबोध, सांगीतिक दृष्टि, अनुशासन, साधना तथा सांस्कृतिक मूल्यों का भी समावेश होता है। यही विशेषता गुरु-शिष्य परम्परा को भारतीय संगीत की जीवंत ज्ञानधारा के रूप में प्रतिष्ठित करती है।³

वर्तमान समय में विश्वविद्यालयीय शिक्षा, संस्थागत पाठ्यक्रम, ऑनलाइन शिक्षण तथा डिजिटल संसाधनों ने संगीत-अध्ययन के स्वरूप को व्यापक बनाया है। इसके बावजूद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गहनता, शैलीगत विशिष्टता तथा घराना-परम्परा की निरन्तरता आज भी गुरु-शिष्य सम्बन्ध की जीवंत परम्परा पर ही आधारित है। अतः यह आवश्यक है कि गुरु-शिष्य परम्परा को केवल एक पारम्परिक शिक्षण-पद्धति के रूप में न देखकर भारतीय ज्ञान परम्परा के एक सशक्त एवं जीवंत स्वरूप के रूप में समझा जाए। प्रस्तुत शोधपत्र का उद्देश्य इसी परिप्रेक्ष्य में हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परम्परा के स्वरूप, उसकी ज्ञानमीमांसीय विशेषताओं तथा समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है।

2 भारतीय ज्ञान परम्परा एवं गुरु-शिष्य परम्परा की अवधारणा

'ज्ञान' भारतीय दार्शनिक परम्परा में केवल तथ्यों अथवा सूचनाओं के संग्रह का पर्याय नहीं है, बल्कि वह सत्य के बोध, आत्मानुभूति तथा जीवन के समग्र विकास का माध्यम माना गया है। भारतीय चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक व्यक्तित्व का निर्माण करना है।⁴ इसी कारण भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरूप अनुभवप्रधान, मूल्यनिष्ठ, समन्वयात्मक तथा लोकमंगलोन्मुख माना गया है। यह परम्परा वेद, उपनिषद्, दर्शन, पुराण, आयुर्वेद, योग, साहित्य, संगीत, नाट्य तथा अन्य विविध ज्ञान-विधाओं के माध्यम से सहस्राब्दियों से निरन्तर प्रवाहित होती रही है।⁵

'परम्परा' का अभिप्राय केवल अतीत से प्राप्त किसी प्रथा का अनुसरण करना नहीं है, बल्कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान, अनुभव, मूल्यों एवं सांस्कृतिक चेतना के सतत् हस्तांतरण से है। भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल आधार यही निरन्तरता है, जिसके माध्यम से ज्ञान का संरक्षण, संवर्धन तथा पुनर्सृजन

होता रहा है। इस ज्ञान-संप्रेषण की प्रक्रिया में गुरु का स्थान केन्द्रीय रहा है, क्योंकि भारतीय परम्परा में गुरु को केवल शिक्षक नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक एवं संस्कार का संवाहक माना गया है।⁶

भारतीय परम्परा में गुरु-शिष्य सम्बन्ध पारस्परिक विश्वास, श्रद्धा, अनुशासन, सेवा तथा जिज्ञासा पर आधारित माना गया है। श्रीमद्भगवद्गीता में ज्ञान प्राप्ति के लिए 'प्रणिपात', 'परिप्रश्न' तथा 'सेवा' को आवश्यक बताया गया है, जिससे स्पष्ट होता है कि ज्ञान केवल औपचारिक शिक्षण से नहीं, बल्कि गुरु के प्रति समर्पण, संवाद एवं साधना से प्राप्त होता है।⁷ उपनिषदों में भी गुरु-शिष्य संवाद के माध्यम से ज्ञानार्जन की परम्परा का विस्तृत वर्णन मिलता है, जहाँ प्रश्नोत्तर, तर्क, चिंतन एवं आत्मानुभूति शिक्षा के प्रमुख आधार हैं।⁸

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के संदर्भ में गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय ज्ञान परम्परा की इसी अवधारणा का व्यवहारिक एवं जीवंत स्वरूप प्रस्तुत करती है। संगीत की सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ जैसे राग का स्वरूप, श्रुति, स्वर-संवेदन, आलाप, तान, लयकारी तथा भावाभिव्यक्ति मुख्यतः प्रत्यक्ष शिक्षण, अनुकरण, निरन्तर रियाज एवं गुरु के सान्निध्य में ही आत्मसात् की जाती हैं। अतः यह

परम्परा केवल शिक्षण-पद्धति नहीं, बल्कि ज्ञान, अनुभव, संस्कार एवं सांस्कृतिक निरन्तरता के समन्वित हस्तांतरण की एक जीवंत भारतीय ज्ञान परम्परा है।

3. शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा: एक जीवंत भारतीय ज्ञान परम्परा

3.1 हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा का स्वरूप

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षण-परम्परा का मूल आधार गुरु-शिष्य सम्बन्ध रहा है। यह परम्परा केवल संगीत की तकनीकी शिक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि ज्ञान, साधना, अनुशासन, संस्कार तथा कलात्मक दृष्टि के समन्वित विकास पर आधारित एक समग्र शिक्षण-पद्धति है। भारतीय संगीत की अधिकांश विधाएँ दीर्घकाल तक मौखिक परम्परा के माध्यम से संरक्षित एवं संप्रेषित होती रही हैं, जिसके कारण गुरु का प्रत्यक्ष मार्गदर्शन संगीत-अध्ययन का अनिवार्य अंग माना गया।⁹

गुरु-शिष्य परम्परा में संगीत का शिक्षण पुस्तकीय ज्ञान अथवा स्वरलिपि पर पूर्णतः निर्भर नहीं होता, बल्कि श्रवण, अनुकरण, निरन्तर रियाज तथा प्रत्यक्ष अभ्यास के माध्यम से सम्पन्न होता है। गुरु शिष्य की स्वर-साधना, लयबोध, राग-विस्तार, आलाप, तान, बंदिश तथा भावाभिव्यक्ति का निरन्तर मार्गदर्शन करता है। इस प्रक्रिया में शिष्य केवल संगीत की तकनीकी दक्षता ही प्राप्त नहीं करता, बल्कि प्रस्तुति की सौन्दर्य-दृष्टि, मंचीय मर्यादा तथा सांगीतिक संवेदनशीलता का भी विकास करता है।¹⁰

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में विभिन्न घरानों की परम्परा भी गुरु-शिष्य सम्बन्ध की निरन्तरता का सशक्त उदाहरण है। प्रत्येक घराना अपनी विशिष्ट गायकी, राग-विन्यास, लयकारी, स्वर-प्रयोग तथा सौन्दर्यबोध को गुरु से शिष्य तक क्रमबद्ध रूप से हस्तांतरित करता है। इस प्रकार गुरु-शिष्य परम्परा केवल संगीत-शिक्षा की पद्धति नहीं, बल्कि सांगीतिक विरासत, सांस्कृतिक मूल्यों तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण और संवर्धन का जीवंत माध्यम है। वर्तमान समय में संस्थागत एवं डिजिटल संगीत-शिक्षा के विस्तार के बावजूद हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सूक्ष्मताओं के प्रभावी अधिगम के लिए गुरु-शिष्य परम्परा आज भी समान रूप से प्रासंगिक एवं अपरिहार्य बनी हुई है।¹¹

3.2 ज्ञान के संप्रेषण की प्रक्रिया

भारतीय ज्ञान परम्परा में ज्ञान का संप्रेषण केवल सूचना अथवा तकनीकी दक्षता का हस्तांतरण नहीं, बल्कि अनुभव, संस्कार, मूल्य एवं जीवन-दृष्टि के समग्र संचार की प्रक्रिया है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की गुरु-शिष्य परम्परा इसी सिद्धान्त पर आधारित है, जिसमें गुरु अपने अर्जित ज्ञान, साधना एवं कलात्मक अनुभव को प्रत्यक्ष शिक्षण, अनुकरण, संवाद तथा निरन्तर अभ्यास के माध्यम से शिष्य तक पहुँचाते हैं। यह प्रक्रिया मुख्यतः मौखिक परम्परा पर आधारित रही है, जहाँ राग, बंदिश, आलाप, तान, लयकारी तथा प्रस्तुति की सूक्ष्मताओं का संचार श्रवण, मनन और निरन्तर रियाज के माध्यम से होता है।¹²

इस परम्परा में ज्ञान का अर्जन केवल बौद्धिक स्तर तक सीमित नहीं रहता, बल्कि शिष्य के व्यक्तित्व, अनुशासन, धैर्य, विनम्रता तथा साधना के संस्कारों का भी निर्माण करता है। गुरु शिष्य की योग्यता एवं ग्रहणशीलता के अनुसार शिक्षण की पद्धति निर्धारित करते हैं, जिससे प्रत्येक शिष्य का संगीतात्मक विकास उसकी व्यक्तिगत क्षमता के अनुरूप होता है। वर्तमान में भारतीय ज्ञान प्रणाली तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी

अनुभवात्मक अधिगम, गुरु-मार्गदर्शन और मूल्यपरक शिक्षा पर बल देती है। इस प्रकार गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन का एक प्रभावी माध्यम है।¹³

3.3 गुरु-शिष्य परम्परा : एक जीवंत भारतीय ज्ञान परम्परा

गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय ज्ञान परम्परा की सबसे प्राचीन एवं जीवंत परम्पराओं में से एक है। इस परम्परा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि व्यक्ति के समग्र व्यक्तित्व, नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चेतना तथा व्यावहारिक कौशल का विकास करना है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में यह परम्परा विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही है, क्योंकि संगीत का वास्तविक ज्ञान पुस्तकों की अपेक्षा गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन, श्रवण, अनुकरण तथा निरंतर साधना से प्राप्त होता है।¹⁴

गुरु अपने अनुभव, साधना तथा परम्परागत ज्ञान को शिष्य की क्षमता एवं ग्रहणशीलता के अनुसार प्रदान करते हैं। शिष्य केवल राग, ताल, बंदिश अथवा गायन-वादन की तकनीक ही नहीं सीखता, बल्कि संगीत की सौन्दर्य-दृष्टि, अनुशासन, धैर्य, समर्पण तथा सांस्कृतिक मूल्यों को भी आत्मसात करता है। यही कारण है कि प्रत्येक घराना अपनी विशिष्ट शैली, सौन्दर्यबोध और प्रस्तुति-पद्धति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखने में सफल रहा है। वर्तमान समय में यद्यपि संगीत-शिक्षा के अनेक संस्थागत एवं डिजिटल माध्यम विकसित हो चुके हैं, फिर भी गुरु-शिष्य परम्परा की प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली भी अनुभवात्मक अधिगम, मूल्यपरक शिक्षा तथा गुरु-मार्गदर्शन को भारतीय शिक्षा की आधारशिला मानती है।¹⁵

अतः यह कहा जा सकता है कि गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय ज्ञान परम्परा की निरन्तरता, संरक्षण तथा संवर्धन का सबसे सशक्त माध्यम है और हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की आत्मा आज भी इसी परम्परा में निहित है।

3.4 समकालीन परिप्रेक्ष्य

वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी तथा डिजिटल माध्यमों के विकास ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के शिक्षण एवं प्रसार को नए आयाम प्रदान किए हैं। आज ऑनलाइन कक्षाएँ, डिजिटल अभिलेखागार तथा आभासी मंचों के माध्यम से संगीत शिक्षा व्यापक स्तर पर उपलब्ध हो रही है। फिर भी गुरु-शिष्य परम्परा का मूल स्वरूप आज भी प्रासंगिक बना हुआ है, क्योंकि संगीत की सूक्ष्म अभिव्यक्तियाँ, राग की अनुभूति, सौन्दर्यबोध तथा प्रस्तुति-कौशल का प्रभावी विकास गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन और निरन्तर साधना से ही सम्भव होता है।¹⁶ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली भारतीय परम्परागत ज्ञान, अनुभवात्मक अधिगम और मूल्यपरक शिक्षा को आधुनिक शिक्षा के साथ समन्वित करने पर बल देती है।

अतः समकालीन परिप्रेक्ष्य में आवश्यक है कि तकनीकी संसाधनों का उपयोग गुरु-शिष्य परम्परा के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि उसके सशक्त पूरक के रूप में किया जाए। इस प्रकार यह परम्परा आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को विकसित करते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा की निरन्तरता को सुनिश्चित करती है।¹⁷

4. समकालीन चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति तथा संस्थागत शिक्षा के विस्तार ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। विश्वविद्यालयों, संगीत महाविद्यालयों तथा ऑनलाइन माध्यमों ने संगीत शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया है, किन्तु इसके साथ गुरु-शिष्य संवाद की निरन्तरता, दीर्घकालिक साधना तथा व्यक्तिगत मार्गदर्शन जैसी परम्परागत विशेषताओं में आंशिक कमी भी अनुभव की जा रही है। सीमित शिक्षण समय, पाठ्यक्रम-केन्द्रित अध्ययन तथा व्यवसायीकरण के कारण अनेक बार संगीत की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों, घराना-परम्परा तथा सांगीतिक संस्कारों का समुचित हस्तांतरण प्रभावित होता है।¹⁸

यद्यपि ये चुनौतियाँ महत्वपूर्ण हैं, तथापि वर्तमान समय अनेक नई संभावनाएँ भी प्रस्तुत करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भारतीय ज्ञान परम्परा को शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर समाविष्ट करने पर बल देती है तथा गुरु-शिष्य परम्परा जैसे अनुभवाधारित शिक्षण-मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की दिशा में प्रेरित करती है।¹⁹ विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों एवं सांस्कृतिक संगठनों द्वारा गुरु-आवासीय कार्यशालाएँ, दीर्घकालिक मेंटरशिप कार्यक्रम, डिजिटल अभिलेखीकरण तथा घराना-परम्पराओं के दस्तावेजीकरण जैसे प्रयास इस दिशा में उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।²⁰ इसके अतिरिक्त, प्रत्यक्ष गुरु-मार्गदर्शन एवं आधुनिक डिजिटल संसाधनों के समन्वित उपयोग से ऐसी शिक्षण प्रणाली विकसित की जा सकती है जो

परम्परा की मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए समकालीन आवश्यकताओं की भी पूर्ति करो। इस प्रकार समकालीन चुनौतियाँ, यदि दूरदर्शी दृष्टिकोण से संबोधित की जाएँ, तो गुरु-शिष्य परम्परा को और अधिक सुदृढ़ एवं प्रासंगिक बनाने का अवसर भी प्रदान करती हैं।²¹

5. निष्कर्ष

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा भारतीय ज्ञान परम्परा का एक जीवंत एवं सतत् प्रवाहमान स्वरूप है, जिसने सदियों से संगीत के सैद्धान्तिक, व्यावहारिक तथा सांस्कृतिक पक्षों को सुरक्षित रखते हुए पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान का संप्रेषण किया है।²² प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि यह परम्परा केवल संगीत-शिक्षण की एक विधि नहीं, बल्कि ज्ञान, साधना, अनुशासन, संस्कार तथा आत्मानुभूति पर आधारित समग्र शिक्षण-दृष्टि का प्रतिनिधित्व करती है। गुरु के मार्गदर्शन, शिष्य की साधना तथा मौखिक परम्परा के समन्वय ने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की मौलिकता, घराना-परम्परा तथा कलात्मक उत्कृष्टता को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।²³

समकालीन समय में यद्यपि संस्थागत शिक्षा, तकनीकी विकास तथा डिजिटल माध्यमों ने संगीत-अध्ययन के नए आयाम विकसित किए हैं, तथापि इन परिवर्तनों के मध्य गुरु-शिष्य परम्परा की आवश्यकता और प्रासंगिकता समाप्त नहीं हुई है। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल्यों के आलोक में यह परम्परा आज भी व्यक्तित्व-निर्माण, सांस्कृतिक निरन्तरता तथा गुणवत्तापूर्ण संगीत-शिक्षा का प्रभावी माध्यम बनी हुई है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 भी भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण एवं समावेशन पर बल देती है, जिससे इस परम्परा के पुनर्संश्लेषण की संभावनाएँ ओर अधिक सुदृढ़ होती हैं।²⁴

अतः आवश्यक है कि विश्वविद्यालयों, संगीत संस्थानों, सांस्कृतिक अकादमियों तथा गुरुओं के सामूहिक प्रयासों से गुरु-शिष्य परम्परा के मूल स्वरूप को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक तकनीकी संसाधनों के साथ उसका संतुलित समन्वय स्थापित किया जाए। यही प्रयास हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की समृद्ध परम्परा को भावी पीढ़ियों तक प्रभावी रूप से पहुँचाने तथा भारतीय ज्ञान परम्परा की निरन्तरता को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध होगा।²⁵

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल उद्देश्य केवल ज्ञान का संचय न होकर उसके माध्यम से व्यक्ति, समाज तथा संस्कृति के मध्य एक सशक्त सेतु का निर्माण करना है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा इसी उद्देश्य की सार्थक अभिव्यक्ति है, क्योंकि इसके माध्यम से संगीत केवल एक कला के रूप में नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टि, नैतिक मूल्यों तथा सांस्कृतिक चेतना के रूप में भी विकसित होता है। गुरु द्वारा प्रदत्त ज्ञान शिष्य के निरन्तर अभ्यास, आत्मानुशासन तथा साधना के माध्यम से परिपक्व होकर अगली पीढ़ी तक पहुँचता है, जिससे भारतीय सांगीतिक विरासत की निरन्तरता बनी रहती है।

आज के वैश्विक परिवेश में जहाँ शिक्षा के स्वरूप में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं, वहाँ भारतीय ज्ञान परम्परा के मूल सिद्धान्तों को समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप पुनर्स्थापित करना समय की आवश्यकता है। विशेष रूप से संगीत शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी शिक्षण व्यवस्था विकसित की जानी चाहिए, जिसमें विश्वविद्यालयीय अध्ययन, अनुसंधान, डिजिटल प्रौद्योगिकी तथा गुरु-शिष्य परम्परा परस्पर पूरक बनकर कार्य करें। इससे एक ओर भारतीय शास्त्रीय संगीत की मौलिकता एवं घराना-परम्परा का संरक्षण सुनिश्चित होगा, वहीं दूसरी ओर नई पीढ़ी में सांगीतिक संवेदनशीलता, सांस्कृतिक उत्तरदायित्व तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रति गहन सम्मान का विकास भी होगा।

अन्ततः यह कहा जा सकता है कि हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गुरु-शिष्य परम्परा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य दोनों के लिए समान रूप से प्रासंगिक एक जीवंत भारतीय ज्ञान परम्परा है। इसके संरक्षण, संवर्धन एवं समुचित पुनर्स्थापन के माध्यम से न केवल भारतीय संगीत की गौरवशाली परम्परा सुरक्षित रहेगी, बल्कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के मूल आदर्श ज्ञान, साधना, संस्कार एवं लोकमंगल भी सतत् रूप से अक्षुण्ण बने रहेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. तैत्तिरीय उपनिषद्, शिक्षावल्ली, अध्याय 1, अनुवाक 11
2. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 34
3. शार्ङ्गदेव, संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय
4. ऋग्वेद, 1, 164 (ज्ञान एवं सत्य की अवधारणा से सम्बन्धित सूक्त)।
5. तैत्तिरीय उपनिषद्, शिक्षावल्ली, अध्याय 1

6. डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भारतीय दर्शन, भाग-1
7. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 34
8. छान्दोग्य उपनिषद् (उद्दालक-1, श्वेतकेतु संवाद) अथवा मुण्डक उपनिषद्, प्रथम मुण्डक।
9. शार्ङ्गदेव, संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय (संगीत की परम्परा एवं शिक्षण सम्बन्धी विवेचन)।
10. भरतमुनि, नाट्यशास्त्र, अध्याय 28-34; श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 34
11. संगीत नाटक अकादमी, भारतीय शास्त्रीय संगीत की मौखिक एवं गुरु-शिष्य परम्परा सम्बन्धी विवरण।
12. Kapila Vatsyayan, The Square and the Circle of the Indian Arts, New Delhi: Abhinav Publications, 1983, pp. 25-32.
13. Ministry of Education, Government of India, National Education Policy 2020, New Delhi, 2020, pp. 19-22.
14. Kapila Vatsyayan, The Square and the Circle of the Indian Arts, New Delhi: Abhinav Publications, 1983, pp. 41.
15. Ministry of Education, Government of India, National Education Policy 2020, New Delhi, 2020, pp. 32
16. Kapila Vatsyayan, The Square and the Circle of the Indian Arts, New Delhi: Abhinav Publications, 1983, pp. 61.
17. Ministry of Education, Government of India, National Education Policy 2020, New Delhi, 2020, pp. 75.
18. शार्ङ्गदेव, संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय।
19. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020; यूजीसी, भारतीय ज्ञान प्रणाली दिशा-निर्देश।
20. संस्कृति मंत्रालय, गुरुशिष्य परम्परा संवर्धन संबंधी योजना।
21. संगीत नाटक अकादमी, भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं गुरु-शिष्य परम्परा संबंधी विवरण।
22. शार्ङ्गदेव, संगीत रत्नाकर, प्रथम अध्याय।
23. श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय 4, श्लोक 34
24. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020; यूजीसी भारतीय ज्ञान प्रणाली दिशा-निर्देश।
25. संगीत नाटक अकादमी, भारतीय शास्त्रीय संगीत एवं गुरु-शिष्य परम्परा संबंधी विवरण।